त्रैलोक्य *n.* (e त्रिलोकी tres mundi - gr. 674. - s. य) tres mundi. Su. 1. 7. 24. 4. 1. N. 13. 16.

त्रैविद्य (a त्रिविद्य *n.* - gr. 674. - tres scientiae, tres libri sacri - *Vêdi* - s. य) trium *Vêdorum* peritus. Bh. 9. 20.

त्रोटक *n.* (r. त्रुट् s. अक) genus fabulae (Wils. «*a minor drama, such as the Vikramôrvasi*»).

त्रौक् 1. *A.* (गतौ *K.* गत्याम् *V.*) ire; *v.* ठिक्, टौक्.

त्र्यक्ष *m.* (tres oculos habens e त्रि et अक्ष) nomen *Sivi.* Mah. 1. 7315.

त्र्यम्बक *m.* (e त्रि et अम्बक) *id.* A. 3. 50.

1. त्वक्ष् 1. *P.* *i. q.* तक्ष्.

2. त्वक्ष् 1. *P.* (त्वचो ग्राहे) cutem accipere. *Cf.* त्वच्.

त्वच् 6. *P.* (संवरणे *K.* वृत्याम् *V.*) tegere. (Fortasse huc pertinent lat. *tego*, mutatâ tenui in mediam; german. vet. *dekiu*; lith. *dengiù*; v. Graff. 5. 99.)

त्वच् *f.* (a praec.) 1) cutis. Ragh. 3. 26. 2) cortex.

त्वच *n.* (r. त्वच् s. अ) *id.*

त्वञ्च् 1. *P.* (गतौ *K.* इतौ *V.*) ire; *v.* तञ्च्, ठिक्.

त्वत् *Ablat. sg. pron. 2dae pers., qui in initio compp. thematis vice fungitur*; *v. gr.* 265. *et* 679.

त्वत्तस् (a praec. s. तस्) *i. q.* त्वत्.

त्वद्गुणाकृष्टचित्त *Adj.* (*BAH.* e *TATP.* त्वद्गुण - त्वत् + गुण tui virtutes - et *BAH.* आकृष्टचित्त, आकृष्ट + चित्त, attractam mentem habens) tuis virtutibus attractam mentem habens. In. 5. 35.

त्वम् (gr. 265.) tu. (Lat. *tu*, lith. *tù*, gen. *tawês*, hib. *tu*, goth. *thu*, slav. *ty*, gr. τούν, τύ, σύ.)

त्वर् 1. *A.* *interdum P.* festinare. H. 4. 47.: त्वरस्व भीम; N. 20. 17.: त्वरते भवान्; In. 5. 52. H. 2. 16.: त्वरमाणः; Sa. 1. 33.: भर्तुर् अन्वेषणे त्वर; Mah. 1. 7539.: दृष्ट्वा तान् त्वरन्ति — त्वरित festinans. N. 2. 26. 23. 21. — *Caus.* त्वरयामि incitare. R. Schl. II. 64. 63.: इता वैवस्वतस्यै ऽते कौशल्ये त्वरयन्ति माम्; N. 19. 12.: स त्वर्यमाणो बहुशः (V. तुर्, तूर्, तृ, i. e. तर्, et cf. slav. *tvorjû* facio, *tvarj* creatura, ratione habitâ, radicem चर् q. v. et ire et facere significare; hib. *tuairim* «I go round, encompass, draw a circle».)

त्वरा *f.* (r. त्वर् s. आ) festinatio.

त्वष्टृ *m.* (r. त्वक्ष् s. तृ) 1) faber lignarius. 2) Viśvakarmanus, deorum artifex. Ragh. 6. 32. (v. तष्टृ).

1. त्विष् 1. *P. A.* 1) lucere, splendere. Bhatt. 14. 70.: तित्विषुः; Rig-V. 52. 6.: तित्वेष. 2) *in dial. Vêd.* collustrare, ornare. Rig-V. 102. 7.: अमात्रन् त्वा धिषणा तित्विषे मही «immensum te hymnus ornavit magnus».)

2. त्विष् *f.* (a praec.) splendor, lumen. Ragh. 3. 15. 4. 75.; *v.* त्विषाम्पति.

त्विषा *f.* (r. त्विष् s. आ) *id.*

त्विषाम्पति *m.* (luminum dominus e त्विष् *in gen. pl.* et पति) sol. Am.

त्सर् 1. *P.* (छद्मगतौ) clam, occulto ire. (*Cf.* सृ *i. e.* सर्.) c. अव *in dial. Vêd.* aufugere. Rig-V. 71. 5.: अवत्सरत् पृशाय्यः «aufugit pugnax *hostis*».

थ

थुड् 6. *P.* (संवृतौ) tegere, operire. (Cambro-brit. *tuzaw* id.)

थुर्व् 1. *P.* (हिंसायाम् *K.* वधे *V.*) laedere, ferire, occidere. (*Cf.* तुर्व्, उर्व्, धुर्व्, जुर्व्.)

द

द (r. दा s. अ) dans, *in fine compp. ut* जलद.

1. दंश् 1. *P.* (in tempp. special. nasalem ejicit) mordere. N. 14. 12.: अदशद् दशमे पदे; R. Schl. I. 45. 20.: ददंशुर् दशनैः; Sak. 133. 8.: बिम्बाधरन् दशसि चेद् भ्रमर